स्पंदन पुष्टि

वक़्त कहाँ रुकता है

कोई कैसे रुक जाते

उसपार ही है कोई

हम भी उसपार किनारे

कोई नहीं रुकता है

किसीकी पुकार से

कौन कैसे कहीं रुकाये

सत्य यही है योग्य सही है

किसीको क्या कहना

किसीका क्या रखना

हर कोई हर का लेता जाये

हर कोई हर का भरता जाये

मिले है वो जो जो

बिछड़े है वो जो जो

जो रुणाबन्ध बंधाये

कर्म धर्म ही से गंठाये

हे श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

हुई हो भूल कोई तो उसे दिलसे भूला देना

आया हूँ संसार में कोई दर्द जगाया होगा

खेल खेला वचन न निभाया हूँ कभी पराया

क्षमा मांगते है निःसंदेह दिलसे

याद कर चुन चुन पूर्ण करना

"Vibrant Pushti"

इसने ये पाया

इसने ये खोया

इसने ये बोया

इसने ये धोया

इसने ये घवाया

इसने ये कमाया

इसने ये बसाया

इसने ये जमाया

इसने ये लूटाया

इसने ये भूलाया

इसने ये डुबोया

इसने ये भुसाया

इसने ये जगाया

इसने ये लजाया

इसने ये बढ़ाया

इसने ये दबाया

इसने ये बुझाया

इसने ये भगाया

इसने ये बचाया

इसने ये बिकाया

इसने ये नचाया

इसने ये लगाया

इसने ये सुनाया

इसने ये नसाया

इसने ये कराया

इसने ये भराया

इसने ये सजाया

इसने ये बहाया

इसने ये मिलाया

इसने ये सरजाया

इसने ये समझाया

इसने ये भरमाया

इसने ये लहराया

इसने ये प्रकटाया

इसने ये शरमाया

इसने ये बहलाया

इसने ये बदलाया

इसने ये नहलाया

इसने ये सहराया

इसने ये करवाया

इसने ये बनवाया

इसने ये संवाराया

सोचलो क्या क्या करते है - होता है

यही सबके बीच में ऐसे ऐसे ही जीते है

क्या ऐसा मनमें नही उठता है, कुछ करें

जो व्यक्ति के मन का विचार द्वार ही असमंजस से उघड़ता है

उनका मन कैसा होगा?

जो व्यक्ति के तन का कार्य द्वार ही असंख्या से उघड़ते है

उनका तन कैसा होगा?

जो व्यक्ति के धन का उपार्जन द्वार ही विभिन्नता से खुलता है

उनका धन कैसा होगा?

जो व्यक्ति के संस्कार का सिंचन द्वार ही अलगता से सिंचता है

उनका संस्कार कैसा होगा?

जो व्यक्ति के संस्कृत का शिक्षा द्वार ही अधुरपता से भरता है

उनका संस्कृति कैसी होगी?

जो व्यक्ति के प्रवृत का कर्म द्वार ही असंयोजन से घड़ता है

उनकी प्रवृति कैसी होगी?

जो व्यक्ति के आचार का शिष्टा द्वार ही अशिष्ट से विचरता है

उनका आचरण कैसा होगा?

जो व्यक्ति के गृह द्वार ही भिन्नता से खुलते है

उनका गृह कैसा होगा?

जो व्यक्ति के निर्वाह द्वार ही अल्पता से खुलते है

उनका निर्वाह कैसा होगा?

जो व्यक्ति के दिन द्वार ही अंधेरा से उठता है

उनका जीवन कैसा होगा?

जो व्यक्ति के आँचल द्वार ही अनगिनत से बंधते है

उनका चरित्र कैसा होगा?

क्या नाथद्वार जाएं

क्या द्वारका जाएं

क्या यमद्वार जाएं

क्या देवद्वार जाएं

क्या स्वर्गद्वार जाएं

क्या वैकुंठ द्वार जाएं

ओहह परमेश्वर!

"Vibrant Pushti"

खुद को खुद की तरह जीना है?

सच! सोचलो!

खुद की तरह जीना है तो खुद को खुद की तरह सँवरना है, सँवारना है।

खुद की तरह सँवरने के लिए खुद को साक्षर होना है, संस्कृत होना है, शिक्षित होना है।

कैसे हो सकते है?

यह समाज में जीने से हो है?

यह कुटुंब में रहने से हो सकते है?

यह गृहस्थ जीवन से हो सकते है?

यह ज्ञान की उपाधि पाने से हो सकते है?

यह भाव भक्ति पाने से हो सकते है?

यह तवंगर या अमीर होने से हो सकते है?

यह धर्म आचार्य या गुरु होने से हो सकते है?

यह संसार त्यागने से हो सकते है?

यह विश्व जीतने से हो सकते है?

यह जीवन जीतने से हो सकते है?

यह महात्मा होने से हो सकते है?

यह परमात्मा होने से हो सकते है?

नही नही! ऐसा कोई सामर्थ्य से नही हो सकता है।

जगत के कोई आधत्य पति या अधिकारी के चरित्र देखलो, आधत्यपदक को पूछलो।

तो क्या करें?

केवल वो ही खुद को खुद की तरह जी सकता है

जो खुद खुद की ऊर्जा पहचान सके

जो खुद खुद का तेज तेजोमय कर सके

जो खुद खुद की परम सर्वश्रेष्ठ दिशा पर कदम भरता रहे

जो खुद खुद की सर्व सिद्धि सुसंयोजन में बाँट सके

जो खुद खुद को हर पदार्थ में लूटा सके

जो खुद खुद को खुद में एकत्व कर सके

जो खुद खुद को

प्रीत का आकाश

प्रीत की धरती

प्रीत का सागर

प्रीत का वायु

प्रीत का अग्नेय

प्रीत का परमप्रिय हो सके वो ही खुद की तरह जी सकता है।

कोई है? कौन है?

खुद को खुद की तरह जीना है?

सच! सोचलो!

खुद की तरह जीना है तो खुद को खुद की तरह सँवरना है, सँवारना है।

खुद की तरह सँवरने के लिए खुद को साक्षर होना है, संस्कृत होना है, शिक्षित होना है।

कैसे हो सकते है?

यह समाज में जीने से हो सकते है?

यह कुटुंब में रहने से हो सकते है?

यह गृहस्थ जीवन से हो सकते है?

यह ज्ञान की उपाधि पाने से हो सकते है?

यह भाव भक्ति पाने से हो सकते है?

यह तवंगर या अमीर होने से हो सकते है?

यह धर्म आचार्य या गुरु होने से हो सकते है?

यह संसार त्यागने से हो सकते है?

यह विश्व जीतने से हो सकते है?

यह जीवन जीतने से हो सकते है?

यह महात्मा होने से हो सकते है?

यह परमात्मा होने से हो सकते है?

नही नही! ऐसा कोई सामर्थ्य से नही हो सकता है।

जगत के कोई आधत्य पति या अधिकारी के चरित्र देखलो, आधत्यपदक को पूछलो।

तो क्या करें?

केवल वो ही खुद को खुद की तरह जी सकता है

जो खुद खुद की ऊर्जा पहचान सके

जो खुद खुद का तेज तेजोमय कर सके

जो खुद खुद की परम सर्वश्रेष्ठ दिशा पर कदम भरता रहे

जो खुद खुद की सर्व सिद्धि सुसंयोजन में बाँट सके

जो खुद खुद को हर पदार्थ में लूटा सके

जो खुद खुद को खुद में एकत्व कर सके

जो खुद खुद को

प्रीत का आकाश

प्रीत की धरती

प्रीत का सागर

प्रीत का वायु

प्रीत का अग्नेय

प्रीत का परमप्रिय हो सके वो ही खुद की तरह जी सकता है।

कोई है? कौन है?

"Vibrant Pushti"

क्या अपेक्षा रखते है

क्या आशा करते हो

क्या इच्छा धारते हो

क्या तितिक्षा सोचते हो

क्या मांगना चाहते हो

क्या लेना विचारते हो

क्या अपना करने में दौड़ते हो

किससे ये सब मिलेगा?

जिसके पास भी यही सब ही है

जिसके साथ भी यही सब ही है

जिसके अंदर भी यही सब ही है

जिसके बाहर भी यही सब ही है

जिसके मन में भी यही सब ही है

जिसके आचरण में भी यही सब ही है

जिसके आवरण में भी यही सब ही है

जिसके अनावरण में भी यही सब ही है

जिसके कारण में भी यही सब ही है

जिसके विचरण में भी यही सब ही है

जिसके वरण में भी यही सब ही है

जिसके तन में भी यही सब ही है

जिसके कर्म में भी यही सब ही है

जिसके मर्म में भी यही सब ही है

जिसके चर्म में भी यही सब ही है

हम अपेक्षित

हम आशातित

हम इच्छित

हम तितिक्षित

हम माँगतित

हम ग्राह्यतित

हम अपनातित

एक तृणसा

एक छोटासा

एक समान्यसा

एक साधरणसा

तो उनका संस्कृत है

तो उनका साक्षर है

तो उनका स्नेह है

तो उनका धर्म है

तो उनका कर्म है

तो उनका ज्ञान है

तो उनका भाव है

तो उनका सामर्थ्य है

क्या उनसे पाना!

जिसकी दृष्टि ही तृष्टि भरी

जिसकी वृत्ति ही विष भरी

जिसकी कामना ही स्वार्थ भरी

एक तिनका से भी सूक्ष्म समझ और रीत कहे आकाश की

एक तृण से भी सूक्ष्म प्रीत की जानकारी और पूर्णता चाहे सागर की

नही नही! जो खुद को न पहचान सके वह प्रेमामृत क्या पहचाने!

यह तो किनी किनी के पास और किनी कीनी के साथ ही है

जिसे वैष्णव कहते है

जिसे प्रियतम कहते है

जिसे प्रिये कहते है

जिसे कृष्ण कहते है

जिसे बुद्ध कहते है

जिसे ....

"Vibrant Pushti"
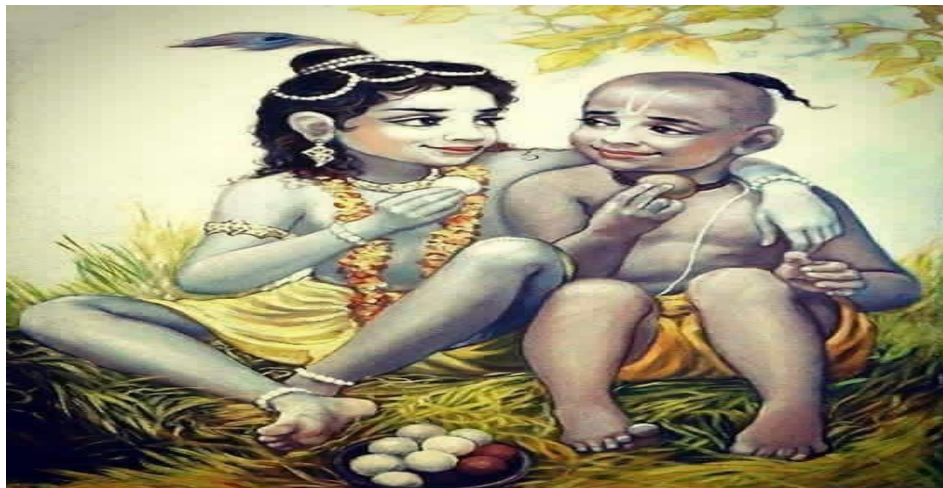
"कौमार्य" कितना शौर्य भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आग्नेय भरा शब्द

"कौमार्य" कितना विशुद्धता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना कुर्बान भरा शब्द

"कौमार्य" कितना न्योछावर भरा शब्द

"कौमार्य" कितना प्रचंडता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना प्रखरता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना ललकार भरा शब्द

"कौमार्य" कितना तीव्रता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना अनहद भरा शब्द

"कौमार्य" कितना विश्वास भरा शब्द

"कौमार्य" कितना हिम्मत भरा शब्द

"कौमार्य" कितना माधुर्य भरा शब्द

"कौमार्य" कितना रणकार भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आंतर द्रढ़ता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना रंग भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आहुति भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आंतर शक्ति भरा शब्द

"कौमार्य" कितना गहराई भरा शब्द

"कौमार्य" कितना शृंगार भरा शब्द

"कौमार्य" कितना सत्य आचरण भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आत्म प्रबल भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आत्मीय ऊर्जा भरा शब्द

"कौमार्य" कितना साक्षर भरा शब्द

"कौमार्य" कितना कर्मनिष्ठ भरा शब्द

"कौमार्य" कितना विशिष्ठ भरा शब्द

"कौमार्य" कितना वंदनीय भरा शब्द

"कौमार्य" कितना सर्वश्रेष्ठ भरा शब्द

"कौमार्य" कितना पूजनीय भरा शब्द

"कौमार्य" कितना पवित्रता भरा शब्द

"कौमार्य" कितना गोपनीय भरा शब्द

"कौमार्य" कितना आनंद भरा शब्द

"कौमार्य" कितना प्रीत भरा शब्द

क्या समझते है हम, एक जीव है हम?

क्या धारते है हम, एक सांसारिक जीव है हम?

क्या विचरते है हम, एक साधारण जीव है हम?

क्या घड़ाते रहते है हम, एक सामान्य है हम?

क्या करते रहते है हम, एक अनुकरण जीव है हम?

क्या जीते है हम, एक जगतवासी है हम?

क्या सीखते है हम, एक अनुचर है हम?

क्या अपनाते है हम, एक आडंबरी है हम?

क्या संस्कृत है हम, एक अहंकारी है हम?

ओहह श्री वल्लभ!

शर्म है, बेशर्म है, न जीव है न ज्योत है

केवल और केवल एक अछूत है।

"Vibrant Pushti"

"दुःख"

दुःख का अर्थ,

दुःख का उदभवना,

दुःख का उत्स होना,

दुःख उठना,

दुःख पैदा करना,

दुःख उत्पन्न करना,

दुःख जगाना,

दुःख बढ़ाना,

दुःख सहना,

दुःख झेलना,

दुःख पीना

दुःख रहना,

क्या समझते है हम, यह दुःख क्या है? यह दुःख क्यूँ है?

यह दुःख मुझे ही क्यूँ?

बस मन में आ गया दुःख, और चिल्लाने लगे

बस कुछ ऐसा वैसा जानने आ गया और दौड़ने लगे

बस कुछ ऐसा अनुभव होने लगा और एहसास जताने लगे

बस कुछ ऐसा किसीने कह दिया और तय कर के झेलने लगे

बस कुछ ऐसा समझ लिया और भिसने लगे

बस कुछ ऐसा सुन लिया और झिझकने लगे

बस कुछ ऐसा सुध लिया और झुंझुमने लगे

ओहह मन!

ओहह मानव!

सच! श्रीप्रभुने अर्थात परम आत्म तत्व ने ऐसा संचालन व्यवस्था रची है कि कौन क्या करें!

"Vibrant Pushti"

हमारे घर भी पुत्र का जन्म होता है

हमारे घर भी पुत्री का जन्म होता है

हर जन्म से हम अपनी संस्कृति से जोड़ते है

हर जन्म से उनका नाम संस्कार करण हम हमारी ज्ञानता और भावना से करते है, क्यूँकी बार बार रटन से हमें हमारी ज्ञानता और भावना द्रढ हो हम अपने आपको न भूले।

हम अपने धर्म और कर्म संस्कार उनमें उजागर अर्थात सिंचित करके खुद को कृतार्थ करे।

हम अपने सपनों से उन्हें प्रेरित करके साकार करने की भूमिका बनाये।

हम अपने आपको अपनी कर्तव्यनिष्ठा से अपनी आंतरिक सिद्धि सिद्ध करे।

"Vibrant Pushti"
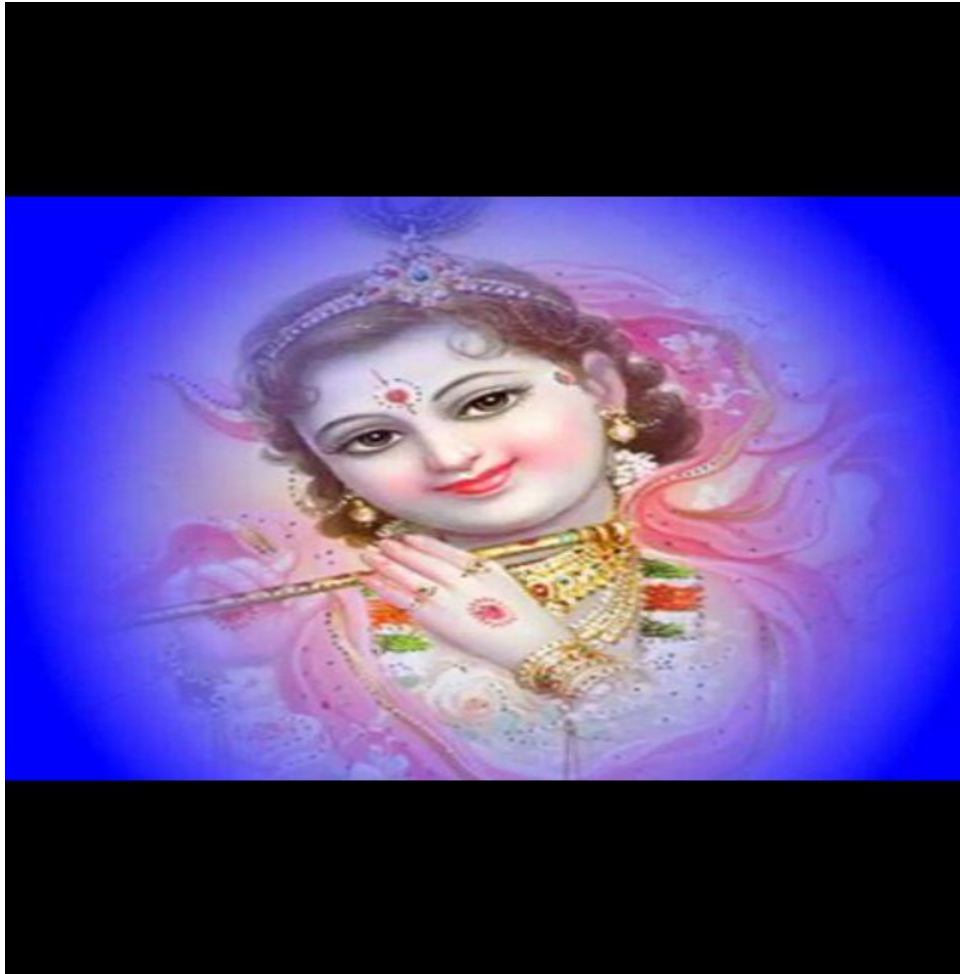
ऐसा तो क्या आकर्षण है यह पृथ्वी का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह धरती का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह सृष्टि का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह प्रकृति का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह मानव का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह दानव का

ऐसा तो क्या आकर्षण है यह संस्कृति का

की हर कोई चले आते है जन्म धरने

जो कभी राम बनके

तो कभी श्याम बनके

जो कभी शिव बनके

तो कभी जीव बनके

जो कभी रावण बनके

तो कभी कंस बनके

जो कभी सीता बनके

तो कभी राधा बनके

जो कभी भक्त बनके

तो कभी साधारण बनके

जो कभी आचार्य बनके

तो कभी शिष्य बनके

कितने रुप धरे है और धरता है

फिर भी

आता ही रहता है आता ही रहता है

ओह्ह श्री प्रभु!

"Vibrant Pushti"
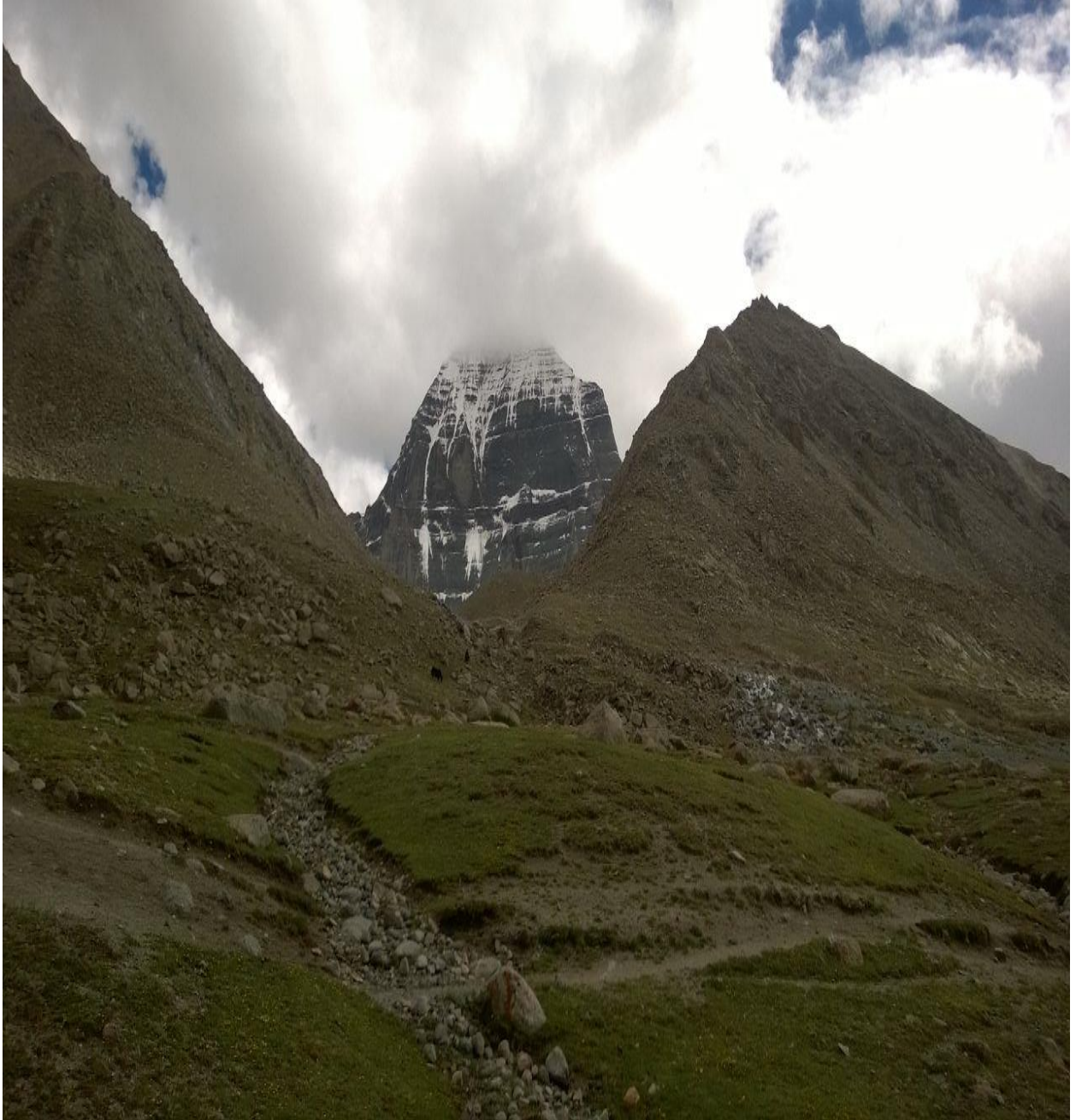
कौन जीत पाया है मन को

कौन जीत पाया है तन को

कौन जीत पाया है धन को

कौन जीत पाया है प्रीत को

कौन जीत पाया है जीवन को

कौन जीत पाया है माया को

कौन जीत पाया है संस्कार को

कौन जीत पाया है अहंकार को

कौन जीत पाया है भगवान को

कौन जीत पाया है पंच महाभूत तत्व को

कौन जीत पाया है जन्म को

कौन जीत पाया है धर्म को

कौन जीत पाया है कर्म को

कौन जीत पाया है सृष्टि को

कौन जीत पाया है ब्रह्मांड को

कौन जीत पाया है सत्य को

कौन जीत पाया है विश्वास को

कौन जीत पाया है अद्वैत को

सोच के अवश्य हमें उत्तर देना,

चिंतन से अवश्य हमें कहना,

हृदयस्थ भाव से अवश्य हममें बताना,

आत्मीय ज्ञान से अवश्य हमें मार्गसूचक करना,

"Vibrant Pushti" **" जय जय श्री गोविंद "**

"माँ" हमारी कुल देवी

"माँ" हमारी आद्य देवी

"माँ" हमारी जन्म धात्री

"माँ" हमारी जीवन धात्री

"माँ" हमारी संस्कार सिंचनी

"माँ" हमारी जीवन धात्री

"माँ" हमारी पौषण धात्री

"माँ" हमारी कर्म शास्त्री

"माँ" हमारी आनंद धात्री

"माँ" हमारी सेवा धात्री

"माँ" हमारी फल पात्री

"माँ" हमारी सह यात्री

ओहह माँ! तुझे प्रणाम!

तुझसे है मेरा उद्धार!

तुझसे है मेरा आदर

तुझसे है मेरा सत्कार

तुझसे है मेरा आधार

तुझसे है मेरा स्वीकार

तुझसे है मेरा संस्कार

तुझसे है मेरा दुलार

तुझसे है मेरा दीदार

तुझसे है मेरा खुमार

तुझसे है मेरा प्यार

"माँ" हे माँ!

"Vibrant Pushti"
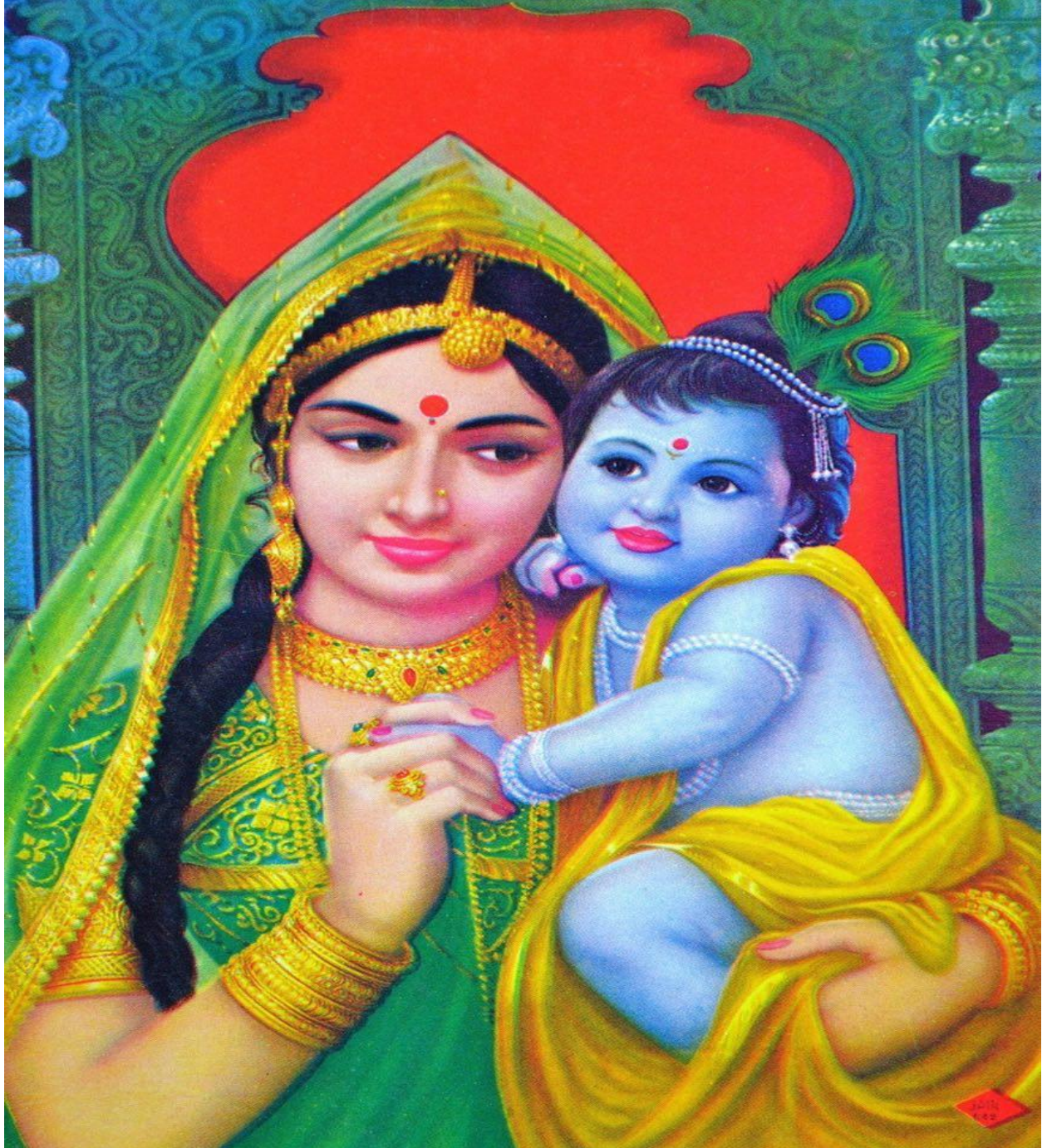
क्या बदला ले सकू यह जगत से

क्या बदला चूका सकू यह सृष्टि का

क्या बदला हो सके यह समाज से

क्या बदला भर सकू यह प्रकृति का

क्या बदला सोच सकू यह कुटुंब से

क्या बदला रख सकू यह संबंधी का

ऐसे पंछी है ब्रह्मांड का

कब कहाँ उड़ जाय

कब कहाँ ठहर जाय

कब कहाँ रुक जाय

कब कहाँ चलत जाय

अगर किसीको

कुछ हो आया

कुछ भर गया

कुछ सोच आया

कुछ लग आया

तो माफ करना हमें

हम तो केवल

खुद को उजागर करके आपको प्रीत करते है

खुद से प्रीत कर के अपनी प्रीत लूटाते है

खुद से विरह पा के तुमसे प्रीत निभाते है

तुम कहीं दूर हम कहीं दूर

प्रीत की रीत से साथ है

प्रीत की रीत से एक है

"Vibrant Pushti"

मनुष्य मनुष्य होते भी साथ नही रह सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी योग्य विचार नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी संगठित नही हो सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी सत्य नही समझ सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी योग्य नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी समझा नही सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी निखालस नही हो सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी रास्ता नही निकाल सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी उच्च नीच का भेदभाव नही मिटा सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी सहकार्य नही आयोजित कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी असमंजस उदभवते रहते

मनुष्य मनुष्य होते भी आनंद नही लूटा सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे को लूटते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे को घुमाते

मनुष्य मनुष्य होते भी स्वार्थवृत्ति धरते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूसरे को नीचा दिखाते

मनुष्य मनुष्य होते भी एक दूजे से झगड़ते रहते

मनुष्य मनुष्य होते भी जीवन नर्क बनाते

मनुष्य मनुष्य होते भी किसीको अपना नही कर सकते

मनुष्य मनुष्य होते भी तफावत रचे

"Vibrant Pushti" **" जय श्री महाकाल "**

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी संस्कृति है

जो संस्कृति से सारे परमात्मा एक बालक हो जाता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी प्रकृति है

जो प्रकृति से कष्ट तो क्या कोई दुष्ट भी उनके पास शुद्ध हो जाता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसी सुश्रुसा है

जो सेवा से रोग तो क्या कोई वेदना भी उनके आसपास से डरते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा विश्वास है

जो श्वास से वासना तो क्या कोई काम अर्थात विषय उनसे युगों दूर रहते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा आनंद है

जो आनंद से सर्वोच्च कोई सर्वानंद नही हो सकता है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा योग है

जो योग से केवल और केवल कर्मयोग यज्ञ ही आहूत होते है, जिसमें संसार की, जीवन की हर पूर्णता संस्कृत होती है।🌷

पति पत्नी की रीत ही एक ऐसा एकात्म है

जो एकात्म के लिए परम अंश भी खुद को बार बार अवतरुत करते है।🌷

पति पत्नी की रीत ही ऐसी प्रीत है

जो प्रीत में सिरी फरहाद - लैला मजनू - रोमियो - जूलियट - हीर रांझा - सावित्री सत्यवान - अनसूया गौतम जैसे कहीं आत्मा परमात्मा तो क्या - देवी देवता तो क्या जो ब्रह्मांडो की सृष्टि के जो भी परम तत्व है वह भी उनके सामने निम्न है।

"Vibrant Pushti"

जीवन में पत्नी का दुःख या पति का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में पुत्री का दुःख या पुत्र का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में बहन का दुःख या भाई का दुःख

क्यूँ आये?

जीवन में माता का दुःख या पिता का दुःख

क्यूँ आये?

कैसा यह जीवन है?

कैसा यह रिश्ता है?

कैसा यह बंधन है?

कैसा यह संबंध है?

कैसा यह ऋण है?

हमनें जान कर सुख का जिक्र नही किया है

क्यूँकी सुख में हम सोच नही सकते है, चिंतन नही कर सकते है और एक दूजे की योग्यता नही समझ सकते है, इसीलिए........

"Vibrant Pushti"

जीवन तो बहोत से तरासे

तरासते तरासते खुद को भी तरासा

मेरे साथी का भी तरासा

मेरे पितृ का भी तरासा

मेरे समाज का भी तरासा

मेरे धर्म का भी तरासा

घड़ता गया - संवरता गया

जीवन को और जीवन के समय को

कहीं उच्च नीच निहाले

कहीं असमानता अनुभई

कहीं बार यात्रा स्थली निचोड़ी

कहीं बार ज्ञान गुरु निचोड़े

आरंभ से अब तक

हर बार कभी आसमान झुका

हर बार कभी धरती झुकी

हर बार कभी सूरज डूबा

हर बार कभी चंद्र डूबा

"Vibrant Pushti"

न संसय

न उद्वेग

न उचाट

न संकोच

न असमंजस

न अधीर

न रमत

न वृति

न कुमति

न अहवेलना

न संताप

न सहनता

न डर

न अनादर

न जोहुक्म

न दबाव

न आलोचना

न तृष्टता

न अवज्ञा

न जोर

न गैरमार्ग

न अनीति

न दुःख

न एहसान

न मजबूर

न सौदा

न व्यवहार

न अयोग्यता

न अविश्वास

हाँ! फिर भी क्यूँ कुछ अजीबसा लगता है

क्या है प्रीत की रीत?

क्या है प्रीत का न्यारा पण?

क्या है प्रीत की लीला?

क्या है प्रीत की पुष्टि?

क्या है प्रीत की जुस्तजू?

क्या है प्रीत की आरझु?

कुछ तो बता दे?

"Vibrant Pushti"

श्री परंब्रह्म अवतार क्यूँ धारण करते है?

हमारे चौराशी लाख योनि से क्यूँ जुड़ कर मनुष्य योनि को सर्वोत्तम जन्म और पूर्णता का आधार क्यूँ कहते है?

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" कौन है?

"कृष्ण" क्या है?

"कृष्ण" कैसे है?

"कृष्ण" क्यूँ है?

क्या जानते है हम - एक भारतवासी या हिंदुस्तानी

क्या समझते है हम - एक भारतीय या हिंदीय

एक वार्ता

एक कहानी

एक उपदेश

एक चरित्र

एक ऐश्वर्य

एक प्रियतम

एक परमेश्वर

एक योगेश्वर

एक योद्धा

एक गौचारहा

एक भगवान

एक दूत

एक मित्र

एक कपटी

एक पुरुषोत्तम

एक ....

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त........

चिंतन करो यहाँ तक कि खुद कृष्ण हमारे अंदर प्रकट हो जाये।

न धर्म से

न कर्म से

न धन से

न मन से

उन्हें तो केवल अपने आंतर आत्म से सँवारो

शायद वो तुम्हें कही छू जाय!

"Vibrant Pushti"

मैं कौन हूँ?

मैं क्यूँ हूँ?

मैं कैसा हूँ?

मैं क्या हूँ?

मैं क्या कर रहा हूँ?

मैं क्या हो रहा हूँ?

मुझे क्या करना है?

मुझे क्यूँ करना है?

मैं ही क्यूँ?

यह जिज्ञासा हमारा मन बदल देगा

यह पिपासा हमारा धन बदल देगा

यह तृषा हमारा तन बदल देगा

यह शिक्षा हमारा धर्म बदल देगा

यह आकांक्षा हमारा जीवन बदल देगा

यह दिशा हमारा कर्म बदल देगा

यह जिजीविषा हमारा विचार बदल देगा

यह उषा हमारा जन्म बदल देगा

बदल देगा का अर्थ है योग्यता प्रदान करेगा या योग्यता है तो वह योग्यता द्रढ करेगा।

"Vibrant Pushti"

राह एक पर रास्ता अनेक

स्थली एक पर मुसाफिर अनेक

जगह एक पर नक्शा अनेक

चलना एक पर मोड़ना अनेक

संधान एक पर साधन अनेक

गति चिन्ह एक पर गति अनेक

साथ दौड़ना एक पर साथी अनेक

चौराहा एक पर अवरोधक अनेक

इंधन एक पर वाहन अनेक

मार्ग एक पर द्विमार्ग अनेक

नियम एक पर अनियमन अनेक

संचालन एक पर संकेत अनेक

पगडंडी एक पर वटे मार्गी अनेक

भुगतान एक पर भोगते अनेक

नजर एक पर इशारे अनेक

सिपाही एक पर दंडी अनेक

नजदीक हर एक पर दूर अनेक

क्या करे हम तो अधिनियमन भारत के सहनशील भारतीय है

हर राह मेरी है हर गति मेरी है

तो

चलना मेरी मरजी - रुकना मेरी मरजी - हंकारना मेरी मरजी

"Vibrant Pushti"

" जय जय श्री राधे "

कैसे कैसे मन के मनुष्यों में

मैं मनुष्य और मेरा मन

क्या क्या सोचता है

क्या क्या पाता है

मुझमें पल पल परिवर्तन करता है

मुझे पल पल भिन्न भिन्न कहता है

मुझसे पल पल कुछ कुछ करवाता है

क्या हूँ मैं कैसा है मन कैसा हूँ मनुष्य

जो कोई मन ने कुछ कहा

जो कोई मनुष्य ने कुछ करा

न खुद के मन को समझ सका

न कोई मन को पढ़ सका

न खुद का मनुष्यत्व को पहचान सका

न कोई मनुष्य को जान सका

फिरता रहा जन्मों जन्मों तक

भटकता रहा योनि योनि तक

न मन का मनुष्य हो सका

न मनुष्य का मन हो सका

न खुद के मन को संस्कृत कर सका

न खुद का मनुष्यत्व को स्थिर कर सका

यूँही चलता गया मिलता गया लपटता गया

अभी भी मन को और मनुष्यत्व को कहता हूँ

ऐसा संसार है ऐसा जगत है

मेरा मन भी ऐसा है मेरा मनुष्यत्व भी ऐसा है

जो दूसरों के मन के आधीन है

जो दूसरों के मनुष्यत्व के गुलाम है

जो किसीको गुरु बनाया किसीको दोस्त

जो किसीको जीवन साथी बनाया किसीको कुछ

पर

न खुद के मन को कुछ बनाया

न खुद के मनुष्यत्व को कुछ बनाया

यही तो है जीवन मेरा यही है जगत मेरा

यही तो है धर्म मेरा यही तो है कर्म मेरा

मैं न मन हो सका न मैं मनुष्य हो सका

अकेले बैठ के सोच लेना........

"Vibrant Pushti"

क्या लिखूं

क्या कहूँ

यह जगत के लिए

यह मानव जे लिए

मैं खुद एक तिनका हूँ

जो कभी बुझता बुझता रहता हूँ

जो कभी छूता छूता रहता हूँ

जिससे शायद मैं कुछ समझ जाऊँ

जिससे शायद कोई कुछ मुझे कोई लूट जाये

जिससे शायद कोई कुछ मुझे कोई जूड जाये

जिससे शायद कोई कुछ मुझे कोई छोड़ जाये

जिससे शायद कोई कुछ मुझसे बिछड़ जाये

पर

कुछ तो मुझे होना है

कुछ तो मुझे होना है

कुछ तो मुझे होना है

तो ही मैं एक तिनका हूँ

"Vibrant Pushti"

जब रावण मां सीता को हरण कर ले गया तब मन्दोदरी ने रावण से प्रश्न किया कि यदि आपकी सीता में इतनी आसक्ति है तो आप रामका वेश बनाकर भी सीताको ला सकते थे, साधुका वेश क्यों बनाया ?

रावण ने उत्तर दिया ...प्रिये...जब मैने राम के वेश के बारे में विचार किया तब हर स्त्री मुझे माँ रूप में दिखी। इसलिए मैंने वह रूप त्याग दिया। पर साधु के रूप में मैं समाज को यह दिखाना चाहता था कि जिस रूप पर आपका सर्वाधिक विश्वास है, वह ऐसा भी हो सकता है...

और आज ऐसा ही हो रहा चारो ओर

हम ही ऐसे है कि साधु को हमारा आचार्य समझते है

जो सदा उनकी निगाह हमारी सबकुछ उपर ही रहती है, और हम श्रीप्रभु को तो क्या हमारे संस्कार को भूल कर उनसे कैसे कैसे संबंध जोड़ते है, आज्ञा लेते है!

"Vibrant Pushti"

"दान" क्या समझते है

कोई आश्रित को कुछ दे

कोई जरूरियात मंद को कुछ दे

कोई मांगनार को कुछ दे

कोई लाचार को कुछ दे

कोई व्यवस्था के निर्माण में कुछ दे

कोई आश्रम को कुछ दे

कोई सामाजिक सेवा संस्थान को कुछ दे

कोई कौटुम्बिक निसहाय को कुछ दे

कोई निःसहाय को कुछ दे

कोई ब्राहमण समझ कर कुछ दे

यह दान नही है।

दान एक संस्कार है

दान एक विश्वास है

दान एक सामर्थ्य है

दान एक साक्षरता है

दान एक योग्यता है

दान एक शुद्धता है

दान एक पूर्णता है

दान एक सेवा है

दान एक नियामकता है

दान एक संयमता है

दान एक सृजनता है

दान एक कर्मनिष्ठा है

दान एक धर्म है

दान एक आदर है

दान एक आदर्शता है

दान एक ज्ञान है

दान एक माधुर्य है

दान एक संयोगता है

दान एक समानता है

दान एक उत्सव है

दान एक शिक्षा है

दान एक प्रीति है

दान एक नीति है

दान तो सृष्टि - प्रकृति - जगत - ब्रह्मांड का संयमन है, अधिकार है, अहंकार नष्ट करने का अलौकिक अद्वैत हेतु है।

"Vibrant Pushti"

थिरक ने लगा मनवा मोरा

श्रीमद भागवत कथा सुन कर

थिरक ने लगा तनवा मोरा

श्री भीष्म चरित्र समझ कर

थिरक ने लगा धनवा मोरा

श्री रावण सामर्थ्य पहचान कर

थिरक ने लगा आत्मवा मोरा

श्री सीता विरह स्पर्श कर

थिरक ने लगा जन्म मोरा

जी रहा हूँ ऐसे ऐसे धर्म अपना कर

थिरक ने लगा जीवन मोरा

कहाँ कैसे खुद को छुप छुप कर

"Vibrant Pushti"

कैसा है यह मन

कैसे कैसे जगत को रचता रहता है

कैसा कैसा है यह तन

कैसा कैसा संबंध बाँधता रहता है

कैसी कैसी है यह आत्मा

कैसे कैसे जन्म जीवन से खेलता रहता है

"Vibrant Pushti":

मैं कहाँ कहाँ गया ?

मुझे हर जहाँ ले गया जो मेरे मन ने सोचा

मैंने कैसे कैसे सोचा?

मेरा संकल्प से,

मेरी कृति से,

मेरी संस्कृति से,

मेरी शिक्षा से,

मेरा धर्म से,

मेरा आंतर नाद से,

हर जहाँ वह कैसा जहाँ?

जो सांसारिक है

जो प्राकृतिक है

जो धार्मिक है

जो व्यवसायिक है

जो सामाजिक है

जो आध्यात्मिक है

जो मार्मिक है

जो सार्वजनिक है

गया जहाँ पाया ....

पाया ऐसा जिसने जो जो रास्ता बनाया

पाया ऐसा जिसने जो जो कर्म जताया

पाया ऐसा जिसने जो जो धर्म निभाया

पाया ऐसा जिसने जो जो मर्म समझाया

पाया ऐसा जिसने जो जो व्यवहार शिखाया

पाया ऐसा जिसने जो जो प्रकृति उगाया

पाया ऐसा जिसने जो जो जीवन जीया

पाया ऐसा जिसने जो जो संस्कार समाया

पाया ऐसा जिसने जो जो आध्यात्म जगाया

पाया ऐसा जिसने जो जो समाज बसाया

पाया ऐसा जिसने जो जो खुद को बढ़ाया

पाया ऐसा जिसने जो जो तन मन धन रचाया

मुझे मुझसे यही धरना

जो जो मेरा सत्य सँवारा

यही सत्य से जगत संवर्धना

जाना जहाँ जहाँ मेरा जन्म निभाना

"Vibrant Pushti"

आज श्री गणेश चतुर्थी है।

आप क्या समझ रहे हो कि

श्री प्रभु हमारे घर पधारे - हमारे आँगन पधारे!

हाँ!

तो हमें प्रथम खुद को आध्यात्मिक संकल्प करना है,

हमें खुद को आध्यात्मिक पुरुषार्थ करना है,

हमें खुद को आध्यात्मिक अंतःकरण जगाना है।

आध्यात्मिक संकल्प -

हमारे मन, तन, धन में श्री प्रभु पधारे

अर्थात

हम जो भी सोचें - मन

हम जो भी क्रिया करें - तन

हम जो भी व्यवहार धरें - धन

उनमें शुद्धता हो

उनमें पवित्रता हो

उनमें निःस्वार्थ हो

यह शुद्धता हम पायेंगे - हमारा योग्य नियम और संयम से

यह पवित्रता पायेंगे - हमारा आचरण और आवरण से

यह निःस्वार्थता पायेंगे - हम अपने आपको समर्पित करके

यही तो है प्राथमिक प्राधान्य श्री गणेश चतुर्थी की उत्सव की - जो श्री प्रभु पधारे हमारे घर - हमारे आँगन तो हमें कैसा होना है, हमें कैसा रहना है, हमें कैसा सँवरना है।

न समझो ऐसा की यह मर्यादा है

न समझो ऐसा की यह अन्याश्रय है

न समझो ऐसा की यह पुष्टि नही है

अरे!

हममें शुद्धता जगानी है तो

न भेदभाव करें केवल योग्य मन भाव करे

हममें पवित्रता जगानी है तो

न धर्म का विभाजन करें केवल योग्य तन कृति करे

हममें निःस्वार्थता जगानी है तो

न भौतिकता का संग्रह करें केवल योग्य आध्यात्मिक आचरण करे

"Vibrant Pushti"

"सौभाग्य"

हमारे जन्म से लेकर हमारी अनुसार, अनुरूप, अनुभव, अनुमति, अनुग्रह, अनुकूल, अनुगामी, अनुगमन, अनुहार, अनुकरण, अनुकंपा, अनुराग, अनुज्ञात, अनुसंधान, अनुमान, अनुमोदन, अनुशाशन कर्म करते करते जो गति पाते है, यही गति हमें हमारी आंतरिकता और बाह्यता में ज्ञान, भाव, स्पर्श, और आनंद की कक्षा पर पहुंचाते हैं, यही कक्षा सूक्ष्मता से हमारा भाग्य संवारता है और संवारते संवारते हमें सौभाग्य प्राप्त करवाता है, यही सौभाग्य से ही हमें श्री प्रभु स्मरण, श्री प्रभु दर्शन, श्री प्रभु ज्ञान, श्री प्रभु भाव, श्री प्रभु अनुभव, श्री प्रभु स्पर्श होता है।

यही ही सौभाग्य है।

"Vibrant Pushti"

हाँ! आज कहना भी कुछ होता है

हाँ! आज बोलना भी कुछ होता है

हाँ! आज सुनना भी कुछ होता है

हाँ!

पर एक सर्वोत्तम रीत भी है

हाँ! मौन रहना

इससे तो होता ही है

जो संसार के सुख दुःख का फैसला

"Vibrant Pushti"

कितनी बार सुना यह कलयुग है

और

कितनी बार सोचा कि

मेरा जन्म यह कलियुग में ही क्यूँ?

क्या आपने भी कभी सोचा है?

सतयुग में ऐसा क्या था

त्रेतायुग में ऐसा क्या था

द्वापरयुग में ऐसा क्या था

कलयुग में ऐसा क्या है?

परंब्रह्म ने तो तीनो युग में अवतार धारण किया था, क्यूँ?

कैसी लीला

कैसी गति

कैसी रीति

कैसी मति

कैसी तृष्टि

समझना तो चाहिए!

"Vibrant Pushti"
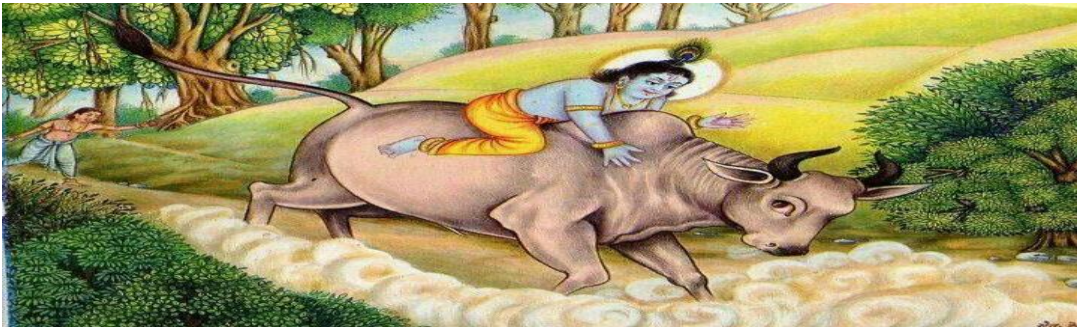
"भगवान" भग + वान = भगवान

भग - जो तत्व हर तत्वों का रक्षण करे

भग - जो तत्व हर तत्वों को विशुद्ध भाव का अनुभव करावे

भग - जो तत्व हर तत्वों का भूत अर्थात अनुशाशन है

भग - जो तत्व प्रकृति, सृष्टि और संसार में रहने और होने से उन्हें प्रकृति, सृष्टि और संसार के बंधनों का स्पर्श नही होता है

भग - जो तत्व अपने विचार, क्रिया और अनुसंधान से प्रकृति, सृष्टि और संसार के घटमाल से मुक्ति प्रदान करे

भग - जो तत्व अपने सामर्थ्य से भूत, वर्तमान और भविष्य में हर तत्वों को योग्यता संस्कृत करे

भग - जो तत्व अपने आप प्रकट हो कर प्रकृति, सृष्टि और संसार का साकार स्वरूप धारण करके सारी प्रकृति, सृष्टि और संसार में आमूल परिवर्तन करके - धर्म संस्थापन करे

यही तो वान है मूल तत्व का

यह तत्व को भगवान कहते है

यह तत्व को परम श्रेष्ठ कहते है

यह तत्व को परमेश्वर कहते है

यह तत्व को परमात्मा कहते है

"Vibrant Pushti"

जीवन के हर जीव की कोई चरित्रता है

प्रकृति के हर तत्व की कोई पहचान है

सृष्टि के हर रचना की कोई स्पष्टता है

ब्रह्मांड के हर पदार्थ की कोई गति है

सच! हर स्पर्शता से जो पुष्टि ऊर्जा उठे तो

हर जीव श्री कृष्ण हो

हर तत्व श्री गोवर्धन हो

हर रचना श्री यमुना हो

हर पदार्थ श्री राधा हो

"Vibrant Pushti"
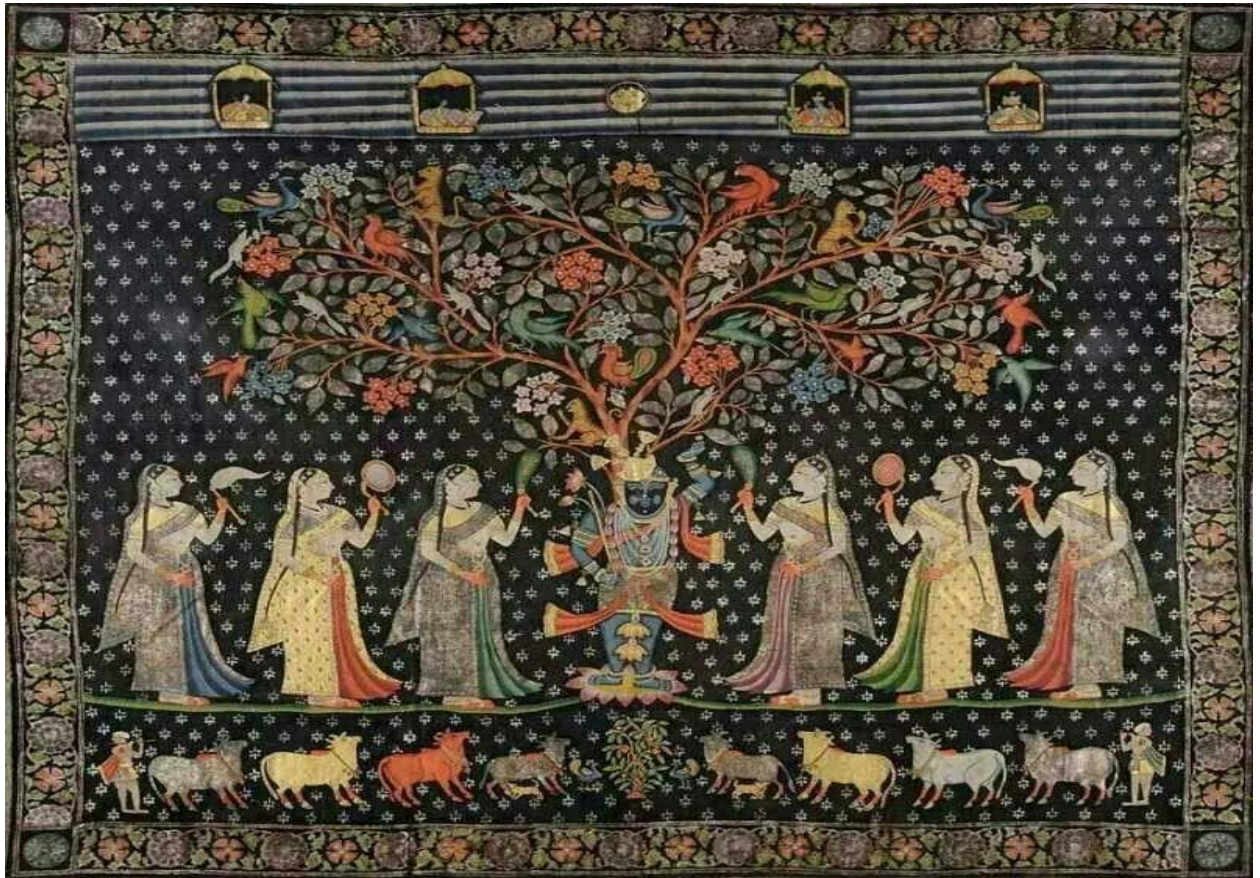
किस्मत का खेल है निराला

जो किस्मत से खेले

उनसे किस्मत खेले

जिसमे सदा किस्मत जीत जाये

पर

जो खुद किस्मत बनाये

वो किस्मत से खेले

उनमें वह खुद जीत जाये

इसीलिए तो

सूरज उगता है

फूल खिलता है

झरना फूटता है

हवा महकती है

और हममें निस्वार्थ विचार प्रेरते है।

"Vibrant Pushti"

"नंद घेर आनंद भयो
जय कनैया लाल की
हाथी घोड़ा पालकी
जय हो नंद लाल की"
क्या कह रहा है यह धून?
"नंद घेर आनंद भयो"
नही सुख भयो नही वैभव भयो
भयो आनंद भयो आंतर नाद
कैसे थे नंद गाँव के वासी
जो कर दिया सारे ब्रहांड को व्रज वासी
एक एक गोपि एक एक गोप
हर एक के तन मन धन में व्याप
अखिल ब्रह्मांड के परंब्रह्म पधारे थानके नन्हा बाल गोपाल
मेरे जीवन में आनंद भरने
मेरे जीवन में प्रीतरस भरने
यमुना जगायी गोवर्धन जगाया
जीवन खेलने अष्टसखा जगाया
साँस साँस राधा प्रकटायी
स्वर स्वर वल्लभ प्रकटाये

ऐसो है मेरो श्री नाथ
ऐसो है मेरो प्रियतम
जो पल पल मेरे साथ जिये
जो क्षण क्षण मेरो हाथ पकड़े
"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण प्रागट्य का रहस्य जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण आक्रंद जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण स्थली जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण कुटुंब जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण गाँव धर्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण समाज कर्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण भौगोलिक जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण आध्यात्म जानना है

"कृष्ण" जानने से पहले हमें कृष्ण प्रीत रीत जाननी है

मेरा समन्वय ऐसे कोई भी स्पर्श से होता है तो मैं "कृष्ण" को जानने की सरलता पा सकता हूँ।

"Vibrant Pushti"

आज एक लेख पढा

थोड़ा सा आत्म रुक गया

थोड़ी सी साँस रुक गयी

थोड़ी सी धड़कन रुक गयी

थोड़ा आगे पढ़ा पर

न मन न मानता था

न तन न जागता था

न जीवन न परिवर्तनता था

न दिल न मधुरता था

पता नही

कैसे रची है सृष्टि

कैसी रची है प्रकृति

कैसी रची है दृष्टि

कैसी रची है पुष्टि

प्रीत को तराशा

रीत को तराशा

धर्म को तराशा

कर्म को तराशा

पर

न खुद संभला

न खुद सँवारा

"Vibrant Pushti"

" जय जय राधा श्री वल्लभ "

क्या है यह पलके
जो न होती तो
न नैन झुकते न नैन उठते
न नैन सोते न नैन जागते

न नैन तिरछते न नैन बरसते

न नैन छुपाते न नैन ढूंढते

न नैन तरसते न नैन बिछड़ते

न नैन रोते न नैन हँसते

न नैन बोलते न नैन कहते

न नैन सुनते न नैन गाते

न नैन इशरते न नैन पुकारते

न नैन मूँदते न नैन बहते

न नैन रुठते न नैन तिरस्कारते

न नैन लपकते न नैन मटकते

न नैन भराते न नैन सुकहाते

न नैन सुलगते न नैन ठंड़ठंड़ाते

न नैन चलते न नैन ठहरते

न नैन बसाते न नैन ठुकराते

न नैन झबकते न नैन टपकते

न नैन चैनाते न नैन बेचैनाते

न नैन खरीदते न नैन बेचते

न नैन तोड़ते न नैन जोड़ते

न नैन ....

"Vibrant Pushti"

चलती है यह धारा

जो धारा मेरे कुल से धरी

चलते गये पूर्वजो के पूर्वजो

मैं भी चलता हूँ यही धारा में

मेरे वंश भी चलते है यही धारा में

उनके भी वंश चलेंगे यही धारा में

कभी ऐसा मोड़ तो कभी ऐसा मोड़

मुड़ते मुड़ते कहाँ कहाँ जाये धारा

जहाँ जाये वहाँ पाये हम हमारे

कहीं कोई कैसे सागर में मिलेगी धारा

अगर हमें मिलना है परम अंशी को

पहुंचना है क्षीरसागर किनारा

खुद चले ऐसे सिद्धांत से

जो धारा मुड़े वही मोड़ से

यही तो है कर्म की जीवनधारा

"Vibrant Pushti"

"रास्ता"

किसे कहते है?

उलट पुलट

अंदर बाहर

टेडा मेडा

तीव्र गति मंद गति

न संकेत न निशानी

न दिशा न दशा

न साधन न बंधन

न अधिकृत न मार्गसूचक

न चौराहा न गलि

न मोड़ न जोड़

न सिपाही न निर्देशक

न नियमन न संयमन

न मर्यादा न शिष्टता

न हादसा न जीवन

न सजा न फरियाद

न मृत्यु न अपंग

न क्रोध न भोग

केवल झझुमना, केवल भटकना, केवल टूटना

केवल बिछड़ना, केवल भ्रमणां

ऐसा है यह रास्ता न मंझिल कोई ओर

रुके वही आशियाना

ऐसा है यह रास्ता जो चले भारतवासी रोज

न खुद का रास्ता तो भी दौड़े विपरीतता मौज

"Vibrant Pushti"

हे मेरे वतन के वासी!

ऐसे जागे है अब हम

कभी न हारे कोई आंधी से

कभी न हारे कोई तूफान से

अङ्ग रहेंगे साथ साथ

निडर रहेंगे बाथ बाथ

कभी न कोई प्रलोभन स्वीकारे

कभी न कोई रिश्वत अपनाये

भगाये भ्रष्ट हर कूट तूट नीतिका

भगाये गरीबी हर जन जीवनका

खुद को करे बुलंद इतना

दीपक जलाये घर घर स्वच्छताका

रंग पूरे एकता विश्वास शांत तिरंगाका

हर हिंदुस्तानी है सैनिक जगत कल्याणका

हर भारतवासी है प्रकृति संस्कृति रखवाला

आओ मिलके करे प्रतिज्ञा

हाथ से हाथ पकड़के करे वादा

सदा ऊंचा रखेंगे तिरंगा

सदा बहायेंगे प्रेम की गंगा

घर घर है हिंदुस्तान हमारा

हमसे है न्यारा हिंदुस्तान प्यारा

"Vibrant Pushti"

" जय भारत "

कितने धागे है जीवन के

ममता का धागा

आँचल का धागा

शिक्षा का धागा

धर्म का धागा

विवाह का धागा

कर्म का धागा

बंधन का धागा

रक्षा का धागा

पघडी का धागा

मृत्यु का धागा

यही सर्वे में उत्तम

प्रीत का धागा

जो बंधते बंधते अतूट होता है

जो छूते छूते अखंड होता है

"Vibrant Pushti"

हे परमेश्वर!

हे परमात्मा!

हे परब्रह्म!

हे अंशी!

अदभुत और अलौकिक है तेरी कृति - आकृति - स्वीकृति - संस्कृति और प्रीति!

"Vibrant Pushti"
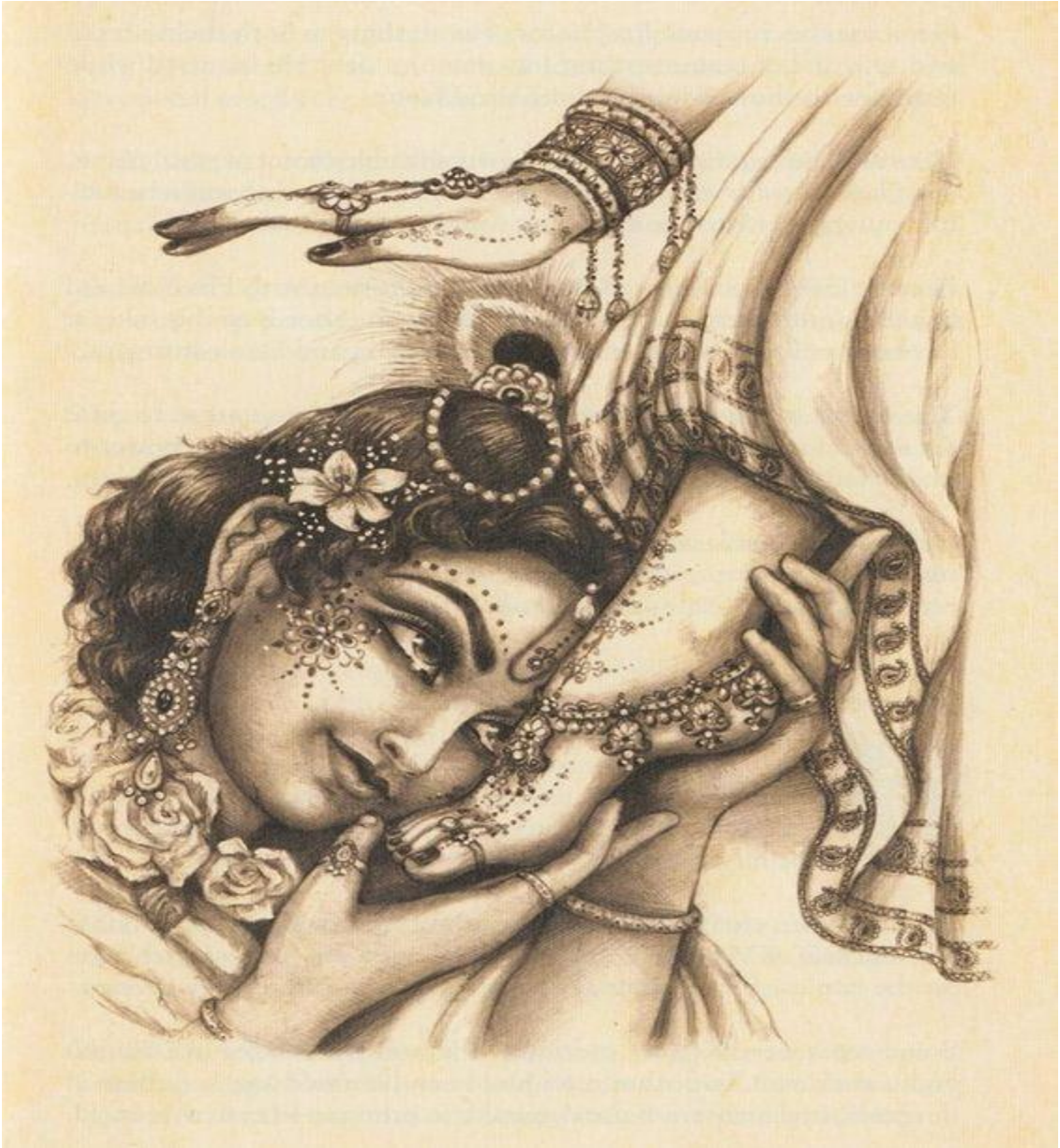
क्या है जीव और क्या है जीवन?

क्या है जन्म और क्या है जगत?

क्या है आत्मा और क्या है परमात्मा?

क्या है विचार और क्या है मन?

क्या है क्रिया और क्या है धन?

क्या है साधन और क्या है तन?

क्या है तत्व और क्या है परिवर्तन?

क्या है धर्म और क्या है संस्कृति?

क्या है प्रीत और क्या है अनुभूति?

क्या है स्त्री और क्या है पुरुष?

"Vibrant Pushti"

जीते जीते कुटुंब को पी जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते समाज की इमारत हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते गाँव के चौराहा हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते शहर का इलाका हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते राज्य का झंडा हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते देश का बलिदान हो जाये वो ही है जिंदगी

जीते जीते आंतरराष्ट्रीय वंदन हो जाये वो ही है जिंदगी

"Vibrant Pushti"

जुगनी रात

टिमटिमाती रात

दीपक रात

उर्जित रात

उजली रात

जागती रात

भड़कती रात

जलती रात

विरह रात

अँसुवन रात

जपती रात

खोजती रात

उठती रात

ढूँढती रात

आह रात

पुकारती रात

ओझल रात

तृष्णा रात

अपलक रात

इंतेज़ार रात

कैसी कैसी रात

भिन्न भिन्न रात

कोई भक्त - कोई प्रियतम - कोई ज्ञानी - कोई तपस्वी - कोई सिद्‌ध - कोई अभद्र - कोई अमानवीय, कोई आत्मीय

ऐसी है रात

ऐसी है फरियाद

जो समझे उन्हें ही स्पर्शे

स्पर्शते स्पर्शते लूट जाती है राते

तरसते तरसते बह जाती है राते

"Vibrant pushti"

कुछ तो है

धरती तरसती है

आसमान तरसता है

सूरज तरसता है

सागर तरसता है

सच!

तो इनसे बने हुए हर कोई भी तरसता ही है

हर तत्व तरसते है

तो उनकी प्यास कौन बुझायेगा?

भगवान!

श्री प्रभु!

गुरु!

माँ!

नही नही कोई नही बुझा सकता।

खुद को पूछलो

जिसको भी पूछना हो तो पूछलो

कौन बुझा सकता है प्यास?

"Vibrant Pushti"

हमारे समाज को शारीरिक और मानसिक निरोगी और योग्य रखने और करने में प्रथम व्यक्तित्व चिकित्सक अर्थात डॉक्टर आते है।

यह तो सच है न!

शायद सच है?

न मजबूरी से सोचो

न कोई डर से सोचो

न कही कही तरह से सोचो

न कोई रिस्तो से सोचो

सच कहें तो

1. अपना स्वास्थ्य निरोगी होगा

2. अपना कोई सेवक जागृत होगा

3. रिस्तो से हम भी खुद को योग्यता पर लाने की कोशिश होगी

खुद न लूटाये खुद की नासमझ से

खुद न टूटे खुद का अज्ञान से

थोड़ी सी हिम्मत थोड़ा सा पुरुषार्थ

समाज को उत्तम कर सकती है

वह चिकित्सक को याद कराओ

तु भी एक मनुष्य है

तुम्हारे सामने है वह भी एक मनुष्य है

लूट लूट के क्या बटोरा?

किसीकी आह, किसीकी आग

जो आत्मीयता से खाक कर देगी

जन्म जन्म को शाप बना देगी

जो जीवन जीवन को अंधेरा कर देगी।

उठो! जगावो खुद के व्यक्तिव को

जो खुद निरोगी वह परम योगी।

"Vibrant Pushti"

कभी ये नैना कुछ पुकारती है

पर कोई सुनता नही है

कभी ये मुखडा कुछ कहता है

पर कोई सुनता नही है

कभी ये साँसे कुछ सुनाती है

पर कोई सुन नही सकता है

कभी ये धड़कन कुछ गुनगुनाती है

पर कोई सुन नही रहता है

कभी ये दिल कुछ गाता है

पर कोई सुनने के आदि नही है

क्यूँकी मन गाता है,

क्यूँकी मन पुकारता है,

क्यूँकी मन गुनगुनाता है,

क्यूँकी मन कहता है,

जिसका मन ही सबकुछ करता रहता है

उनकी साँसे कैसे सुन पायेगा?

उनकी धड़कन कैसे गुनगुनायेगा?

उनकी नैना कैसे पुकारायेगा?

उनका दिल कैसे गायेगा?

"Vibrant Pushti"

" जय जय श्री राधे "

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो ऐसा

ऐसा तो ऐसा

कितनी बार ऐसा

जो बार बार

ऐसा तो ऐसा करे

नही वह स्थिर रहे

हर तरह से ऐसा ऐसा में

खुद को कैसा कर देता है

खुद को कैसा बना देता है

खुद को कैसा घड़ देता है

खुद को कैसा रच देता है

दृष्टि होते हुए भी हम दृष्टि हीन होते है

मन होते हुए भी हम अमान्य होते है

तन होते हुए भी हम नतन अर्थात रोगी होते है

धन होते हुए भी हम निर्धन होते है

धर्म होते हुए भी हम अधर्मी होते है

सच! क्या है हम जो हर रीत से ऐसे ऐसे होते है!

"Vibrant Pushti"

" हे राम "

"योग"

योग अर्थात योग्य विचार

योग अर्थात योग्य क्रिया

योग अर्थात योग्य एकाग्रता

योग अर्थात योग्य संचालन

योग अर्थात योग्य समाधि

योग अर्थात योग्य इंद्रियों संगति

योग अर्थात योग्य प्राकृतिक

योग अर्थात योग्य तत्विक

योग अर्थात योग्य पारायणिक

योग अर्थात योग्य सात्विक

योग अर्थात योग्य धार्मिक

योग अर्थात योग्य तनमनस्कित

योग अर्थात योग्य व्यक्तिक

योग अर्थात योग्य व्यवहारिक

योग अर्थात योग्य समांतर

योग अर्थात योग्य आचरित

योग अर्थात योग्य संयोजित

योग अर्थात योग्य कृतिक

योग अर्थात योग्य सृजित

खुद ही समझले हम योग की कौनसी घटमाल में है?

अगर कोई भी प्रकार में या गुणवत्ता में नही है तो योगभ्रष्ट है।

"Vibrant Pushti"

बूँद बूँद के रुप इतने

हर रुप में कुछ कुछ कहता जाय

बूँद बूँद के स्वरुप इतने

हर स्वरुप कुछ कुछ छूता जाय

बूँद बूँद के रंग इतने

हर रंग कुछ कुछ रंगता जाय

बूँद बूँद के बहाव इतने

हर बहाव कुछ कुछ बहाता जाय

बूँद बूँद के मेल इतने

हर मेल से कुछ कुछ बदलता जाय

बूँद बूँद के स्पर्श इतने

हर स्पर्श से कुछ कुछ परिवर्तता जाय

कैसी कैसी पहचान है बूँद की

जो बूँद पीये वही जाने

"Vibrant Pushti"

"सरलता"

सरल - सरल हम बार बार बोलते रहते है, कहते रहते है। मैं बहोत ही सरल हूँ, मेरे जैसा कोई सरल नही इसीलिए मुझें बार बार यह संसार और ये समाज और ये लोगों में फसता रहता हूँ।

ओह्ह!

न सरलता की समझ

न सरल गुण

न सरलता के अपरस

सिर्फ बोलना और कहना - सरलता अर्थात सरल नहीं है।

सरल अर्थात न स्पर्श सांसारिक माया का

सरल अर्थात न स्पर्श सामाजिक बंधन का

सरल का अर्थ है निष्कपट

सरल का अर्थ है शुद्ध प्राकृतिक

सरल का अर्थ है संपूर्ण पारदर्शक

सरल का अर्थ है योग्यता

सरल का अर्थ है स्वार्थहीन

सरल का अर्थ है अजेय

सरल का अर्थ है सर्व से परे

सरल का अर्थ है अपरस

सरल का अर्थ है सरस

सरल का अर्थ है अमाध्यम

सरल का अर्थ है निस्पृहता

सरल का अर्थ है न क्रोध, न मोह, न आवेश, न आक्रोश

सरलता का अर्थ है असामान्य

सरलता का अर्थ है असाधारण

राजा राम - सरल थे

राजा जनक - सरल थे

लाल बहादुर शास्त्री - सरल थे

संत तुकाराम - सरल थे

ऋषि वशिष्ठ - सरल थे

सती मंदोदरी - सरल थी

संत विदुर - सरल थे

नही है हम

हम कुछ भी बोले या कहे

नही है हम

न हो सकते है

न पा सकते है

संसार की यह रीत से

संसार की यह गति से

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता पहचानने की आकृति नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता देखने की दृष्टि नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता पाने की पुरुषार्थता नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता स्पर्शने की संस्कृतता नही

हे प्रभु! तु है सरल पर तेरी सरलता उजागर करने की जागृतता नही

ओहह श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

" जय श्री राम "

"क्षमा"

क्षमा क्या है?

क्षमा किसे कहते है?

क्षमा कौन कर सकता है?

क्षमा के अधिकारी कौन है?

प्रथम तो मैं आप सर्वे से माफी मांग लेता हूँ, क्यूँकी जो जता रहा हूँ, जो कह रहा हूँ, जो जगा रहा हूँ, वह परम संपूर्ण शुद्ध और सत्य है कि

यह जगत में आज अगर कोई क्षमा शील व्यक्ति हो तो केवल और केवल एक वैज्ञानिक है जो आज पूरे जगत को ब्रह्मांड की दिशा बता रहा है, बाकी न कोई है।

न कोई माँ है।

अगर कोई क्षमाशील हो तो वह परंब्रह्म विशुध्ध तत्व है बाकी नही कोई है।

माफ और क्षमा में बहुत बड़ा अंतर है।

हाँ! माफ करने वाला हो सकता है, पर क्षमा करने वाला तो कोई नही।

क्षमा अर्थात विशुद्धता

क्षमा अर्थात पूर्ण जागृतता

क्षमा अर्थात द्रढ विश्वास

क्षमा अर्थात संपूर्ण योंग्यता

क्षमा अर्थात अतूट दया

क्षमा अर्थात अखंड प्रीत

क्षमा अर्थात निस्वार्थ वीरता

क्षमा अर्थात अलौकिक दान

क्षमा अर्थात सकल सामर्थ्य

क्षमा अर्थात अप्रितम सौंदर्य

क्षमा अर्थात स्थिर समन्वय

क्षमा अर्थात संस्कृत सेवा

क्षमा अर्थात निर्देष्ट आज्ञा

क्षमा अर्थात अचूक समर्पण

धरती - क्षमा

सूर्य - क्षमा

सागर - क्षमा

आचार्य - क्षमा

"Vibrant Pushti"

मनुष्य मन से जुड़ा है उन्हें मनुष्य कहते है। मन कितना सर्वाधिक और सर्वोच्च है जो हमारे जन्म, जीवन और जन्म मुक्ति से जुड़ा है।

मन से उत्स हुए हर धारा से कुछ होता है।

मन से उदभव हुए हर लहर से कुछ होता है।

मन से उठे हुए हर तरंग से कुछ होता है।

मन से जागे हुए हर भाव से कुछ होता है।

मन से प्रकट हुए हर ज्ञान से कुछ होता है।

मन से उजागर हुए हर कश्मकश से कुछ होता है।

मन से मान्यता हुए हर अपनाया से कुछ होता है।

मन से धारा हुए हर चुस्तता से कुछ होता है।

मन से केलवायी हुए हर रीत से कुछ होता है।

मन से माना हुआ हर कार्य से कुछ होता है।

मन से स्थिर हुआ हर संकल्प से कुछ होता है।

मन से अस्थिर हुआ हर विचार से कुछ होता है।

मन से सोचा हुआ हर क्रिया से कुछ होता है।

मन से पुरुषार्थ हुआ हर गति से कुछ होता है।

अर्थात मन से ही कुछ न कुछ होता है।

मन नही तो मनुष्य नही।

मन को कैसा घड़े?

मन को कैसा केलवे?

मन को कैसा रचे?

मन को कैसा शिक्षे?

मन को कैसा संस्कृते?

मन को कैसा धरे?

मन को कैसा मनाये?

मन को कैसा उठाये?

मन को कैसा जगाये?

मन को कैसे स्थिराये?

मन को कैसे मचलाये?

मन को कैसे पुरुषार्थे?

मन को कैसे पहचाने?

मन को कैसे मंथनाये?

मन को कैसे दृढ़ाये?

हमारे जन्म, जीवन और जन्म जीवन प्रयोजन को कैसे सिद्ध करे?

हमारे तन मन धन को कैसे योगत्व करे?

हमारे अस्तित्व को कैसे अंशी युक्त करे?

हाँ! हमें हमारा जन्म, जीवन, और जन्म मुक्ति पाना तो है ही, तो...............

"Vibrant Pushti"

"विषय" ओह्ह क्या है यह?

हम मनुष्य क्या क्या समझ और क्या क्या पहचानना और क्या क्या करना और हर समझ, पहचान और कर्म के प्रश्च्यात हमें कैसे होना है? क्या होना है? नही समझना, नही करना चाहते है। हम तो हमारी हर क्षण क्षणभंगुर करते है और खुद को नष्ट कर रहे है।

हमनें विषयों को ऐसे पाला है, ऐसे सींचा है, ऐसे पीया है, ऐसे धरा है, ऐसे व्यवहारिक किया है कि हम हर विचार से, हर क्रिया से, हर रीत से विशुद्धता को तोड़ते रहते है, सत्य से बिछड़ते रहते है और जगत अर्थात संसार को दुष्ट करते करते खुद को अस्पृश्य करते है।

हम समझते है - हम गहरी बातें समझ नही सकते अरे! खुद को इतना नीचे गिरा दिया है कि केवल विषय ही कि तरफ आकर्षित होते है पर योग्य विचार और क्रिया की तरफ नही मूड सकते इतने तो हम लाचार और अहंकारी है।

सच! कितने .... ओह्ह!

कैसा है यह मानव!

"Vibrant Pushti"

जीवन की सच्चाई में

1, कभी भी कैसी भी सोच जो अच्छी होगी तो हमें तारेगी, जो बुरी होगी तो हमें मारेगी ही

2, कभी भी कैसा भी बोल अर्थात कथन अर्थात कहा जो अच्छा होगा तो हमें साथ देगा जो बुरा होगा तो हमें हैरान करेगा ही

3, कभी भी कैसा भी चुराया होगा जो तुल्य हीन होगा या तुच्छ होगा तो हमसे वापस लेगा ही लेगा

4, कभी भी कैसी भी दृष्टि हमनें निहारी होगी जो शुद्ध होगी वह हमें शुद्ध ही करेगी जो अशुद्ध होगी तो अशुद्ध ही करेगी

5, कभी भी कैसी भी क्रिया हमनें करी होगी जो सैद्धान्तिक होगी तो सैद्धान्तिक पूर्णता करेगी जो असैद्धांतिक होगी तो असैद्धांतिक अधुरूप कर हमें अयोग्य परिष्कृत करेगी ही

"Vibrant Pushti"

भिन्न भिन्न की भिन्नता में खो गया मैं

भिन्न भिन्न की भिन्नता में डूब गया मैं

कैसे भिन्न से जन्म कैसे भिन्न से जीवन

कैसे भिन्न से रंग कैसे भिन्न से संग

सच!

कैसे भिन्न से संस्कार सींचने के

कैसे भिन्न से शिक्षण सिखने के

कैसी भिन्नता से गति जगाने की

कैसी भिन्नता से मति पा ने की

जो पल पल विचार नविचार कराये

जो पल पल क्रिया अक्रिया सरजाये

भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को खुद से भुलाये

भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को अपनो से मिटाये

हा! पस्तावो विपुल झरना

स्वर्ग से गति करता है

पापी उनमें खुद को डूबाके

पूण्यशाली होता है

ओहह! कैसी है भिन्न लीला उपर वाले की

जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को लूटाते जाता है

जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को मारते जाता है

कैसी ये भिन्नता जो न खुद जिये न अपने को जियाये

जो भिन्न भिन्न की भिन्नता में खुद को जलाते जाता है।

ओहह! प्रकृति धारी

ओहह! प्रकृति प्यारे

तुझे यह साधक का आत्मीय प्रणाम!

"Vibrant Pushti"

यहाँ की मिट्टी क्या है?

यहाँ की हवा क्या है?

यहाँ की धरा क्या है?

यहाँ की महक क्या है?

यहाँ की नदी क्या है?

यहाँ की भूमि क्या है?

यहाँ की गूँज क्या है?

यहाँ का जल क्या है?

यहाँ का अन्न क्या है?

यहाँ का साँस क्या है?

यहाँ का वास क्या है?

यहाँ का आवास क्या है?

यहाँ का आकाश क्या है?

यहाँ का सागर क्या है?

यहाँ का स्वर क्या है?

यहाँ का मंत्र क्या है?

यहाँ का धर्म क्या है?

यहाँ का वायु क्या है?

यहाँ का जन्म क्या है?

यहाँ का साक्षर क्या है?

यहाँ का संस्कार क्या है?

यहाँ का जीवन क्या है?

क्या कहे यह हिंदुस्थान को!

सच! क्या है? क्या करते है हम?

हर व्यक्ति सोचे!

हर वासी सोचे!

हर आवासी सोचे!

ओहह! श्री आचार्यो!

ओहह! श्री अवतारों!

ओहह! श्री ....

"Vibrant Pushti"

रथयात्रा में श्री कृष्ण के साथ कौन कौन है?

अति महत्वपूर्ण है यह गति जानने की समझने की, जो हमारे जीवन को कृतार्थ करती है।

सच! यह अति आवश्यक है हमारे जीवन की यात्रा के लिए।

श्री कृष्ण हर लीला की गहराई इतनी सार्थकं, इतनी अलौकिक, इतनी माधुर्य और इतनी सार्वजनिक आनंदित है जो हर तत्व को स्पर्श करके हर तत्व में आनंद का उत्स करती है।

"रथयात्रा" एक अनोखी लीला है। रथयात्रा में वह अपनी बहन श्रीसुभद्रा और भाई श्रीबलभद्र के साथ विहारते है।

क्यूँ बहन श्रीसुभद्रा और भाई श्रीबलभद्र?

ऐसा तो क्या है उन दोनों में जो श्रीप्रभु साथ लेकर विहरते है?

"Vibrant Pushti"

मेरे प्रिये! मेरे परम पूज्य सत्यार्थी!

मेरे परम प्रीते! मेरे परम स्नेहार्थी!

मेरे वंदनीय! मेरे सदा स्मरणीय!

मेरे वचनीय! मेरे कर्मगतिय!

मेरे स्पर्शिय! मेरे दर्शनीय!

मेरे सारथी! मेरे प्रत्यार्थी!

हे मेरे श्री गुरुजी! आपने ह्रदयस्थ प्रणाम!

मुझे मेरे जीवन और जन्म कृतार्थ करने

जो आपके सीमाचिन्ह मार्गदर्शन पा रहा हूँ

यह सदा शिक्षामृत धारा मुझे प्राप्त हो रही है

उन्हें मैं सदा पवित्रार्थे, कल्याणार्थे, योग्यतार्थे, धर्मार्थे हर तत्वों को प्रदान करु ऐसी विनंती स्वीकार्य हो!

"Vibrant Pushti"

"अहं ब्रह्मास्मि" श्री जगतगुरु शंकराचार्यजी ने बृहत और विशालता से द्रष्टि दिशा दर्शायी है, जतायी है कि - हम कौन है? यह पहचान के लिए अति सूक्ष्मता से संस्कृत किया है।

अहंकारी विचार धारा, अर्धज्ञानी चिंतन और मनन धारा से हम खुद को और खुद के विचार और क्रिया को निम्न और अघटित कर दिया है।

"अहं ब्रह्मास्मि" ये कोई साधारण सूत्र नही है। ये अति गूढ, विशुध्ध , संस्कृत स्पर्शिय, प्रज्ञानी सिद्धि है। जो हमें यह उत्स करती है कि

हम खुद ही हमारा सत्य का उजागर करे

हम खुद ही अपने आपको पहचाने

हम खुद ही ज्ञान का दीपक प्रज्वल्लित करे

हम खुद ही हमारा अहंकार नष्ट करे

हम खुद ही हमारा धर्म जगाये

हम खुद ही हमारा चैतन्य स्वरुप जगाये

हम खुद ही हमारे विषयो को अमृत करे

हम खुद ही हमारा द्वैत मिटाये

हम खुद ही हमारा विकार मिटाये

हम खुद ही हममें योग्य व्यक्तित्व जगाये

हम खुद ही आनंद है जो परमानंद हो जाये

हम खुद ही हमारी निस्पृहता को द्रढ करे

हम खुद ही हमारी भ्रमणा को मार सकते है

"अहं ब्रह्मास्मि" को जागृत करना ही हमारी योग्यता है।

हर जीव तत्व "अहं ब्रह्मास्मि" तो सारा जगत ब्रह्म हो तो हम परंब्रह्म में एकात्म हो सकते है।

हमारे सर्वे गुरु आचार्यो को यही

सुमन से चरण स्पर्श वंदन

"Vibrant Pushti" **" हे परब्रह्म "**

थकु मैं ऐसे विचारों से

जो मेरा संसार असार करे

हारु मैं ऐसी वृत्ति से

जो मेरा मन विचलित करे

डरु मैं ऐसे कुकर्म से

जो मेरा अंग अधर्म आचरे

याचूँ मैं ऐसी तृष्णा से

जो मेरा आंतर दीप बुझाये

भागु मैं ऐसी घृणा से

जो मेरा सामर्थ्य हारता जाये

छुपु मैं ऐसे वचन से

जो मेरा अस्तित्व मिटाता जाये

पूछूं मैं ऐसे कथन से

जो मेरा ज्ञान मूर्खता जाये

निभाऊं मैं ऐसे रंज से

जो मेरा संबंध अहवेलता जाये

संस्कृतु मैं ऐसी अविद्या से

जो मेरी शिक्षा भ्रष्टति जाये

विचरु मैं ऐसे कुसंस्कार से

जो मेरा जन्म मरता जाये

अर्चनु मैं ऐसे स्वार्थ से

जो मेरा धन बिखरता जाये

रहूँ मैं ऐसी अशुद्धि से

जो मेरी प्रीत दुष्टति जाये

भजु मैं ऐसे संदेह से

जो मेरा प्रभु रुठता जाये

नहीं नहीं! हे प्रभु प्रियतम!

न मुझसे कुछ ऐसा होना

जो मैं तेरा अंश न रहूँ।

"Vibrant Pushti"

हम मनुष्य है, हममें कहीं ज्ञानेन्द्रियाँ है, भावेन्द्रियाँ है, सिद्धेन्द्रियाँ है, सुसुस्पतेन्द्रियाँ है और कर्मेन्द्रियाँ है।

हर एक कि पहचान है, सार्थकता है, विशेषता है, योग्यता है।

आज हम इनमें से एक का पूछते है

"सुनना" किसे कहते है और क्यूँ कहते है?

"Vibrant Pushti"

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन - ऊर्जा

सचित्र

संस्करण भाग - १

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507